Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 2, Mar-Apr – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 26/02/2020 Accepted on : 05/03/2020 Publication Date: 31/03/2020

भारतीय संस्कृति की अवधारणा तत्व एवं विशेषताऐं

डॉ. कंचन शर्मा
व्याख्याता, संस्कृत (सीटीई) शिक्षा संकाय
आईएएसई (मानित विश्वविद्यालय) गाँधी विद्या मन्दिर,
सरदारशहर

सारांश : राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं -"अर्पित हो मेरा मनुजकाल, बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" अहं से इदं की यह यात्रा 'लघु से विराट' में परिवर्तित होती है। संस्कारों का पालन न होना, इन्हे मात्र कर्मकाण्ड कहकर त्याग देना, अन्धविष्वास या परंपरा निर्वहन क नाम देकर मात्र औपचारिकता पूर्ण करना वर्तमान में भारतीय संस्कृति के ह्यस को व्यक्त करता है। व्यक्तित्व निर्माण में भारतीय संस्कृति सहायक है क्या?संस्कारों का पालन क्यों आवष्यक है? संस्कार कर्मकाण्ड, परंपरा मात्र ही है क्या? वसुधैव कुटुम्बकम् का क्या सम्प्रत्यय है? पुरूशार्थ चतुश्ट्य, कैसे जीवन के लक्ष्य प्राप्ति मे सहायक है?

संस्कृति बनी बनाई या तैयार विषय वस्तु नहीं है। यह साध्य है 'निषपन्न' न होकर निषपादन है। अपने को नये-नये रूप में उत्पन्न करने का भाव है। यह उसके सहज स्वभाव को ऊपर लाना है, यह उसके गुण-धर्म को उभारना है। संस्कृति व्यापक षब्द है। संस्कृति गतिषील है। ठहराव इसी संस्कृति के अनुसार चलने पर बनी हुई राहें हैं, आचरण के कुछ बने हुए सांचे हैं। उन सांचों के प्रतिदर्ष के रूप में रहन-सहन के ढंग हैं। उन्हीं को हम सभ्यता कहते हैं। सभ्यता सभ्य अर्थात सभा में रहने के योग्य से बना है। 'सभा' का अर्थ है एक ऐसा समुदाय जो एक-दूसरे को भली-भाति समझता है और एक दूसरे के साथ अच्छा निर्वाह करता है, साथ-साथ प्रकाषित होता है। कालान्तर में सिविलाइजेषन तो षहर तक केन्द्रित रहा, पर 'कल्चर' षब्द नृतत्व षास्त्र की कृपा से वन में रहने वाले, सभ्यता के पैमाने पर खरे उतरने वाले लोगों के साथ भी जुड़ा। इसलिए घुमन्तू संस्कृति चरागाही संस्कृति, सामंती संस्कृति आदि शब्दों का जन्म हुआ। इन षब्दों का एक मूल षब्द संस्कृति है। जो अपने को बेहतर बनाने का संकल्प है।

संकेत शब्द : संस्कृति, भारतीय संस्कृति, संस्कृति का स्वरूप, संस्कृति के घटक, संस्कृति के पक्ष, विषेशताऐं।

१ प्रस्तावना:

'योग्यता चादधानाः क्रियाः संस्कारा इत्युच्यते' तन्त्र वार्तिक अर्थात् संस्कार वे क्रियाएं अथवा रीतियां है जो योग्यता प्रदान करती हैं। 'संस्कारः प्रयुक्त संस्कार इवाधिकं बभौ' भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख तत्व संस्कार विधान का परिपालन है। यह एक शाश्वत मूल्य है। संस्कार का हमारे व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राश्ट्रीय जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। सम्+कृ+धञ् से उत्पन्न संस्कार का मुख्य अर्थ, शुद्धि अथवा परिश्कार है। इसके अन्तर्गत उन अनुश्ठानों अथवा कृत्यों को सम्मिलित किया गया है जो गर्भावस्था से मृत्यु पर्यन्त आवश्यक है। भारतीय संस्कृति की यह मान्यता है, कि ये अनुश्ठान यथा संभव दुर्गुणों को दूर करके शरीर, वाणी, मन एवं बुद्धि का परिश्कार करते है। वैदिक वाङमय से लेकर चाणक्य नीति के बाद के ग्रंथों में भी इनका वर्णन मिलता है। वर्तमान काल में सौलह में से कुछ संस्कारों का प्रयोग ही हरेक भारतीय द्वारा किया जा रहा है जैसे नामकरण, जातकर्म, चूड़ाकरण, मुण्डन, अन्न प्राशन, विद्यारंभ, यज्ञोपवीत, विवाह, अन्त्येश्टी आदि। जिस प्रकार खेत को जोतकर, बीज वपन के योग्य बनाया जाता है, उसी प्रकार मनुश्य को विभिन्न अनुश्ठानां, अनुशासनों और नियमों से संस्कारित किया जाता है ताकि उसकी पात्रता विकसित हो सके। तन्त्र वार्तिक, 1886 मानव मूल्य परक शब्दावली का विश्वकोश अनुकूल और मानवीय गुणों से युक्त व्यक्तित्व का विकास हो सके। बालक का व्यक्तित्व किस रूप में विकसित हो। राश्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं -"अर्पित हो मेरा मनुजकाल, बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" अहं से इदं की यह यात्रा 'लघु से विराट' में परिवर्तित होती है। संस्कारों का पालन न होना, इन्हे मात्र कर्मकाण्ड कहकर त्याग देना, अन्धविश्वास या परंपरा निर्वहन क नाम देकर मात्र औपचारिकता पूर्ण करना वर्तमान में भारतीय संस्कृति के ह्यस को व्यक्त करता है।
व्यक्तित्व निर्माण में भारतीय संस्कृति सहायक है क्या?
संस्कारों का पालन क्यों आवश्यक है?

संस्कार कर्मकाण्ड, परंपरा मात्र ही है क्या?
वसुधैव कुटुम्बकम् का क्या सम्प्रत्यय है?
पुरूशार्थ चतुश्ट्य, कैसे जीवन के लक्ष्य प्राप्ति मे सहायक है?

२ संकेताक्षर:

संस्कृति, भारतीय संस्कृति, संस्कृति का स्वरूप, संस्कृति के घटक, संस्कृति के पक्ष, विशेशताऐं-

संस्कृतिः-

अंग्रेजी शब्द 'क्लचर' के अर्थ में प्रयुक्त संस्कृति शब्द मूलतः 'संस्कार' ही है। जिसका अर्थ है दोश का निराकरण, गुण का आधान। पणिनी ने अश्टाध्यायी में इस प्रकार संस्कृति के अर्थ को स्पश्ट किया है 'सम' पूर्वक 'कृ' धातु का अर्थ यदि दोश हटाकर गुण जोड़ना अभीप्सित हो तो 'सम' और 'कृ' के बीच 'स' का आगम होता है। इसलिए अनाज फटकने, पानी छानने, मंत्रोच्चारण से मांगलिक अनुश्ठान सभी संस्कार कहलाते है। संस्कार की प्रक्रिया द्वारा बालक में नई-नई शक्तियों का विकास किया जाता है। 'संस्कार के ये अर्थ 'कल्चर' के वाचक 'संस्कृति' में समाहित हैं। संस्कार जहां एक कारक व्यापार है, वहीं संस्कृति क्रिया है। आधुनिक संदर्भ में संस्कृति को परिभाशा करते हुए आचार्य नरेन्द्र देव कहते हैं 'संस्कृति मानव चित्र की खेती है, खेत की उर्वरता को बार-बार सुनिश्चित करने के लिए जोता जाता है। नीचे की मिट्टी ऊपर, ऊपर कीमिट्टी नीचे लाई जाती है और उसमें से सुसुप्त ऊर्जा निकाली जाती है तो उसे संस्कृति कहते हैं।

डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी संस्कृति एक तरह से 'कल्चर' का ध्वन्यात्मक दृश्टि से संवादी शब्द है। इस 'कृश्टि' शब्द का अर्थ खेती के विविध प्रकारों-बागवानी, रेशम के कीड़ों का पालन आदि अर्थों में विस्तृत हुआ, साथ ही किसी भी पदार्थ को संशोधित करके उसके स्वरूप को उत्तम बनाने के अर्थ में परिवर्धित हुआ। इन सभी अर्थों का आधार लेकर संस्कृति शब्द का प्रयोग 'सृजनात्मक ऊर्जा' के अनुसंधान के अर्थ में किया गया। संस्कृति बनी बनाई या तैयार विशय वस्तु नहीं है। यह साध्य है 'निश्पन्न' न होकर निश्पादन है। अपने को नये-नये रूप में उत्पन्न करने का भाव है। यह उसके सहज स्वभाव को ऊपर लाना है, यह उसके गुण-धर्म को उभारना है। संस्कृति व्यापक शब्द है। संस्कृति गतिशील है। ठहराव इसी संस्कृति के अनुसार चलने पर बनी हुई राहें हैं, आचरण के कुछ बने हुए सांचे हैं। उन सांचों के प्रतिदर्श के रूप में रहन-सहन के ढंग हैं। उन्हीं को हम सभ्यता कहते हैं। सभ्यता सभ्य अर्थात सभा में रहने के योग्य से बना है। 'सभा' का अर्थ है एक ऐसा समुदाय जो एक-दूसरे को भली-भाॅंति समझता है और एक दूसरे के साथ अच्छा निर्वाह करता है, साथ-साथ प्रकाशित होता है। कालान्तर में सिविलाइजेशन तो षहर तक केन्द्रित रहा, पर 'कल्चर' षब्द नृतत्व षास्त्र की कृपा से वन में रहने वाले, सभ्यता के पैमाने पर खरे उतरने वाले लोगों के साथ भी जुड़ा। इसलिए घुमन्तू संस्कृति चरागाही संस्कृति, सामंती संस्कृति आदि षब्दों का जन्म हुआ। इन षब्दों का एक मूल शब्द संस्कृति है। जो अपने को बेहतर बनाने का संकल्प है। इस अपने में एक समुदाय भी जो अपना है, सम्मिलित है। अपने लिए न जीकर समुदाय के लिए उच्चतर जीवन उद्देश्यों व मूल्यों के साथ जीना है। समाज में रहने वाले षिष्ट मनुष्यों के सभी साहित्यिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं कलात्मक विचारों और कार्यकलापों का समन्वय संस्कृति है।

'संस्कृति का अर्थ है, संस्कार सम्पन्न जीवन। ये संस्कार मन, वचन और कर्म के द्वारा उत्पन्न किये जाते हैं। विश्व के विराट मंच पर स्वयं प्रकृति इन संस्कारों को उत्पन्न करती है। अतः संस्कृति "हमारे जीवन में छाया हुआ, एक आत्मिक गुण है जो मनुश्य स्वभाव में उसी प्रकार व्याप्त है जिस प्रकार फूलों में सुगंध और दूध में मक्खन इसका निर्माण कोई एक-दो दिन में नहीं होता, युग-युगान्तर में होता है।"

-रामधारी सिंह दिनकर

भारतीय संस्कृतिः-

भारतीय संस्कृति आध्यात्मिक संस्कृति है। धर्म प्रधान संस्कृति है यहां धर्म व्यापक अर्थ में प्रयुक्त है। सद्कार्य, सहयोग, दया, प्रेम व्यक्ति के धर्म बताये गये हैं। यहां तक ईश्वर प्राप्ति हेतु भी 'शरीरं खलु धर्म साधनम्'कहा गया है। धर्म सार्थक जीवन की विधि है। पुरूशार्थ (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) साधन है और षरीर साध्य है। षरीर की उपेक्षा नहीं की गई है। शरीर के भीतर धर्म का प्रयोजन सधता है। क्योंकि यह शरीर ब्रह्मांड का एक प्रतिरूप है। इसलिए शरीर के साधनों का प्रत्येक दैनन्दिन व्यापार ही धर्म है। जब यह मानकर शरीर का कार्य किया जाता है तब समरसता का भाव पैदा होता है। 'आत्मवत सर्वभूतेशु' सभी में स्वयं को देखो। अपने समान सभी को देखो। 'अप्पो दीपो भव''सर्वखलु इदं ब्रह्म'।

महर्षि अरविन्द - "भारत न तो मात्र एक भौगोलिक इकाई है, न ही मात्र भौतिक या लौकिक भूमि का टुकड़ा है, न ही मात्र बौद्धिक अवधारणा है, वरन् यह एक दैवीय अवतार है, एक शक्तिशाली माँ7जिसने शताब्दियों तक अपने शिशुओं का पालन-पोशण किया है। वह आगे और जोर देकर कहते है - राष्ट्र क्या है? हमारी मातृभूमि क्या है? यह केवल भूमि का टुकड़ा नहीं, न ही कोई अलंकार और न ही मस्तिश्क की कोई कल्पना है, यह शक्ति है। करोड़ो ईकाइयों की सभी शक्तियों से मिलकर बनी है, जो भारत और भारतीय संस्कृति का निर्माण करती है।

"मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसी संस्कृति व धर्म का अनुयायी हूँ जिसने पूरे जगत को सहिष्णुता, सार्वभौमिकता एवं स्वीकार्यता जैसे शब्दों से परिचित करवाया"

- स्वामी विवेकानन्द

"मानव समाज के सभी संस्कार जो लौकिक और पारलौकिक उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करते हैं, उसके सर्वाङीण जीवन का निर्माण करते हैं, उसकी संस्कृति कहे जाते हैं। संस्कृति किसी देश, जाति या समाज की आत्मा होती है, इसमें उक्त देश, जाति या समाज के चिन्तन-मनन, आचार-विचार, रहन-सहन, बोली-भाशा, वेशभूशा, कला-कौशल आदि का समावेश होता है"- प्रभुदयाल मित्तल।

"किसी समाज और राश्ट्र की श्रेश्ठतम उपलब्धियां ही संस्कृति है जिनसे समाज और राश्ट्र परिचित होता है" मैथ्यू आर्नोन्ड

संस्कृति का स्वरूप -

1. आध्यात्मिक
2. आदिभौतिक

संस्कृति के घटक-

1.मानव तथा प्रकृति के बीच के विभिन्न संबंधः-अन्न का उत्पादन, उसका संरक्षण, आश्रय स्थानों व गृह का निर्माण, विश्व की या प्रकृति की विभिन्न वस्तुओं को परिवर्तित करके उनका उपकरणों, औजारों, हथियारों व वर्तन के रूप में उपयोग करना। पशुओं व वनस्पतियों, ऋतुचक्र, वातावरण आदि का उचित उपयोग तथा नियमन करना और उनकी सहायता से मानव जीवन को अधिक नियंत्रित, सफल और सुखप्रद बनाना आदि का समावेश है।

2. मनुष्यों के बीच परस्पर में रागात्मक संबंधः- एक ही समाज के व्यक्तियों के पारस्परिक संबंधों का सांस्कृतिक स्वरूप होता है। इसमें परिवारों, कुलों, कबीलों, जातियों तथा विभिन्न सामाजिक संगठनों, दलों के संबंध सम्मिलित हैं। सामाजिक ऊँच नीच की भावना, अमीर-गरीब का स्तर, राजनीतिक तथा धार्मिक संगठनों, सम्प्रदायों, शान्ति संघर्शों और युद्ध के समय उत्पन्न होने वाले सामाजिक संघों का सम्बन्ध आदि इसमें सम्मिलित है।

3. मानव और प्रकृति के बीच आधुनिक संबंधों तथा मनुष्यों के पारस्परिक रागात्मक संबंधों की प्रतिक्रियाः-इन प्रतिक्रियाओं का स्वरूप बौद्धिक और भाव प्रधान दोनों होता है। इन प्रतिक्रियाओं की अभिव्यक्ति विचारों, भावनाओं तथा कार्यों के रूप में होती है। नीति और धर्म विषयक सौन्दर्यात्मक मूल्यों को इसमेंे शामिल किया जाता है।

संस्कृति के पक्ष -

बाहय पक्ष - आन्तरिक का प्रतिबिम्ब न होकर उसमें संबंधित होता है। बाहय आचार हमारे विचारों और मनोवृत्तियों के परिचायक होते हैं। भौतिक वातावरण का प्रभाव बाहय पक्ष पर अधिक रहता है। जैसे पत्थर को कांट-छांट कर मूर्ति बनाना। आन्तरिक पक्ष - में मानव को प्रकृति और आत्मा के संस्कार तथा सुधार की प्रधानता होती है। इस पक्ष में धर्म, नीति, विधि-विधान, विधाएं, कला-कौशल साहित्य व समस्त सद्गुण आते हैं। जैसे मूर्ति में हस्त कौशल से कलात्मकता भरना।

भारतीय संस्कृति के तत्वः-

- **प्राचीनता एवं दीर्घजीविता -**

भारतीय वाङमय के आदि ग्रंथ वेदों एवं मोहन जोदड़ो हड़प्पा के उत्खनन से प्राप्त तथ्यों से सुस्पष्ट हो जाता है कि भारतीय संस्कृति विश्व की सब संस्कृतियों से प्राचीन है। यह दीर्घ जीविता है। वैदिक वाङमय, उपनिशद, गीता, रामायण, महाभारत, स्मृति ग्रंथ इसके प्रतीक हैं। सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय और ब्रहामचर्य का उपदेशआज भी भारतवासियों को कर्ण प्रिय है।

मर्यादा पुरूषोत्तम राम, योगेश्वर कृृष्ण, बुद्ध, महावीर, नानक, सीता, द्रोपदी, दमयन्ती आदि पतिव्रता सती, सावित्री देवियां यहां की आदर्श हैं। इसलिए कवि इकबाल का कथन दृश्टव्य है-

'सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा।
हम बुलबुलें हैं, इसके ये गुलिस्तां हमारा।।
युनानो मिश्र रोमा, सबमिट गये जहां से।
बाकी रहा है फिर भी नामो निशां हमारा।।

आध्यात्मिकता - आध्यात्म भारतीय संस्कृति का प्राण है। राग-द्वेश, काम-क्रोध, से लिप्त संसार इस संस्कृति का लक्ष्य नहीं है, अपितु सर्वव्याप्त ईश्वर का साक्षात्कार ही इसका लक्ष्य है। षड्दर्शन आध्यात्मिकता के पोशक हैं। "आत्मानं विजानाति "अर्थात अपने आपको जानो। महर्षि अरविन्द के अनुसार -"आध्यात्मिकता भारतीय मस्तिष्क की कंुजी है।"
अर्थात भारतीय अध्यात्म में ईश्वर एवं जीव के साथ-साथ माया की भी मान्यता है। तद्नुसार माया के कारण ही अज्ञानी व्यक्ति जगत को सत्य मान बैठता है। माया का आवरण हटते ही-'ब्रहम सत्यं जगत्मिथ्या'की प्रतीती हो जाती है।

न जायते म्रियते वा कदाचित!
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।।
अजो नित्यः शाष्वतोऽयं पुराणे।
न हन्यते हन्यमाने षरीरे।। 2/20
नैन छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैवं क्लेदयन्त्यापो न षोशयति मारूतः।। 2/23

श्रीमद्भगवद गीता

- **आस्तिकता -** आस्तिकता भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण विशेशता है। भारतीय संस्कृति में पारलौकिक सत्ता को स्वीकार किया गया है। इसलिए कवि, लेखक, व्यापारी, संगीतज्ञ, सभी के द्वारा कार्यारम्भ से पहले मंगलाचरण किया जाता है।

न तत्र सूर्योभाति न चन्द्रतारकम्।
नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयम् अग्निः।।
तमेव भान्तम अनुमाति सर्वम्
तस्य भास्य सर्वमिदं वियाति।।
तदेव षुक्रं तद ब्रहमा ता आपः स प्रजापतिः।
सोडयं नो विदधातु वांच्छितफलं त्रेलोक्यनाथो हरिः।।

- **धर्मपरायणता -** भारतीय ऋृशियों तथा विद्वानों ने प्रत्येक अच्छे कार्य को धर्म से जोड़ा है। पुरूशार्थ चतुष्ट्य में भी मोक्ष के अतिरिक्त मुख्य स्थान धर्म का ही है। धर्म से रहित काम तथा अर्थ भी निन्दनीय है। महाभारतकार के अनुसार धर्म की परिभाशा -

धारणाद्धर्म इत्याहुधर्मो धारयते प्रजाः।
यत्स्याद् धारण संयुक्तं स धर्म इति निश्चय।।

-महाभारत, कर्णपर्व 69/58

धर्म का सम्बन्ध सामान्य लोक व्यवहार से ही नही है, अपितु युद्धभूमि में भी कुछ नियमों का पालन किया जाता है, जो धर्म कहे जा सकते है। संस्कार, विद्याध्ययन विवाह, पूज्यजनों के प्रति आदर भाव, प्रजा की सेना धर्म के अंग है। इस लोक में भौतिक उन्नति के साथ-साथ आध्यात्मिक उत्थान की सिद्धि भी हो जाती है।

यतोडभ्युदयहनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः।

मनु ने संपूर्ण वेदों, वेदज्ञोंकी स्मृति, महापुरूशों के आचरणों और अन्तः करण की सन्तुश्टि को धर्म माना है -

वेदोडखिलों धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्।
आचारश्चैव साधूना आत्मन स्तुश्टिरेव च।।

- मनु स्मृति 2/6

- **देवतावाद -** दिव्य गुणों से सम्पन्न षक्तियों को ही देवता माना गया है। यथा - इन्द्र, अग्नि, वायु, वरूण, सूर्य आदि। सृश्टिकर्ता, सृश्टिभर्ता और सृश्टि संहारकत्र्ता के रूप ब्रह्म, विश्णु और महेश की कल्पना की गई। देवताओं का प्रभाव धीरे-धीरे इतना बढ़ा कि इनकी संख्या 33 करौड़ हो गयी।

- **अवतारवाद** - भारतीय का मानना है, कि जगत् में धर्म की स्थापना एवं अत्याचार का दमन करने हेतु अनेक महापुरूशों ने जन्म लिया। 24 अवतारों में राम, कृश्ण, बुद्ध, महावीर आदि।

यदा-यदा हि धर्मस्य गलानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमअधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुश्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे।।

श्रीमद् भगवदगीता 4/78

- **कर्मफल एवं पुनर्जन्मवाद** -मनुश्य को सद् कर्म करने चाहिए। शुभ और अशुभ दोनों कर्मो का फल उसे भोगना होता है। कर्म के कारण ही वह जन्म-मरण के चक्कर में उलझा रहता है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेशु कदाचन।
मा कर्मफल हेतुर्भूर्भा ते सड़ागडस्तु कर्मणि।।

श्रीमद् भगवदगीता 2/47

कर्मफल, भाग्यफल और पुनर्जन्म को स्वीकार करता है। कर्मफल के कारण सद्कर्म की प्रेरणा मिलती है।

- **यम नियमों का पालन** - भारतीय संस्कृति में पाँच यम है सत्य, अंहिसा, अस्तेय, अपरिग्रह तथा ब्रहमचर्य इन पांचो का पालन करना पंच महाव्रत पालन है। इसके अतिरिक्त षौच, सन्तोश, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान ये पांच नियम है। इनका पालन अनिवार्य है।महात्मा गांधी जी के ग्यारह नियम:-

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह
षरीर, श्रम, अस्वाद, सर्वत्र भयवर्जन,
सर्व धर्म समानत्व, स्वदेशी स्पर्श भावना,
विनम्र वृत निश्ठा से, ये एकादश सेव्य हैं।

- **यज्ञों के प्रति आदर** - यज्ञों का जीवन में बड़ा महत्व है, व्यक्तिगत और लोक कल्याण के लिए यज्ञों का आयोजन किया जाता है। पंच महायज्ञ दैनिक रूपसे आवश्यक बताये है। ब्रहम यज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, भूत यज्ञ और अतिथि यज्ञ। इसके अतिरिक्त राजसूय, अश्वमेध, विश्वजित, आदि यज्ञों का संपादन किया जाता है। मनोकामना पूर्ति होती है।

- **पुरूषार्थ -** प्राचीन ऋषिमुनियों ने व्यक्ति की लौकिक तथा पारलौकिक उन्नति के लिए चार पुरूषार्थो की सिद्धि परभावश्यक बतायी है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के महत्व को महर्शि वेद व्यास ने इस प्रकार प्रकट किया है-

अध्वबाहुर्विशैम्येश न च कश्चिच्छृणोति मे।
धर्मादर्थश्च कामश्च किमर्थ न सेव्यते।।

महाभारत, स्वर्गारोहण पर्व 5/62

अतः भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी पुरूशार्थों का सेवन आवश्यक है इन पुरूशार्थो के सेवन से भी धर्म और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

- **वर्णाश्रम व्यवस्था** - भारतीय विद्वानों ने कार्य कुशलता और पुरूषार्थ सिद्धि की दृष्टि से, समाज को चार वर्णो में विभक्त किया है और मानव जीवन को चार आश्रमों में विभक्त किया है। चार वर्णो की यह परंपरा वैदिक काल से चली आ रही है।

ब्राहमणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां षूद्रो आजायत।।

सभी वर्ण अपना-अपना कार्य कर सामाजिक प्रगति में सहायक बने। मानव जीवन को 100 वर्ष का मानकर चार आश्रमों में विभक्त किया - ब्रहमचर्य, विद्याध्ययन, गृहस्थ में विवाह और सन्तानोत्पति, वानप्रस्थ में नागरिक और भौतिक जीवन को छोड़कर वन में निवास करना। सन्यास मेंसांसारिक बन्धनों से मुक्ति।

चातुर्वण्य मया सृश्टं गुणकर्म विभागशः।
तस्य कत्र्ताःमपि मां विद्वचकत्र्तारमव्ययम्।।
ब्राह्मण क्षत्रियविशां षूद्राणां च परं तप।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभाव प्रभवैर्गुणैः।।

श्रीमद् भागवद्गीता 4/14, 18/41

- **सोलह संस्कार** - भारतीय संस्कृति में व्यक्ति के षारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की दृश्टि से सोलह संस्कारों की प्रशंसनीय कल्पना की गई है -

1. गर्भाधान 2. पुंसवन 3. सीमन्तोनयन 4. जातकर्म 5. नामकरण 6. निश्क्रमण 7. अन्न प्राशन 8. चूडाकर्म 9. कर्णभेद 10. उपनयन 11. वेदारंभ 12. समावर्तन 13. विवाह 14. वानप्रस्थ 15. संन्यास 16. अन्त्येश्टि।

- **महान व्यक्तियों के प्रति श्रद्धा** - भारतीय संस्कृति में बड़ो के प्रति आदरभाव की प्रेरणा दी जाती है -

अभिवादन षीलस्य नित्यवृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोवलम्।।

इसके अतिरिक्त 'आचार्य देवो भवः मातृदेवोभव' पितृ देवो भव और अतिथि देवो भव आदि उपनिशद् वाक्य भी व्यक्ति को गुरू, माता पिता तथा अतिथि को देवता मानकर उसका आदर करने की प्रेरणा देते है -

गुरूब्र्रहमा गुरूर्विश्णु गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरूः साक्षातपरब्रहम तस्मै श्री गुरूवै नमः।।

- **विश्वकल्याण कामना** - भारतीय संस्कृति संयुक्त परिवार प्रथा की पक्षपातिनी रही है। उसमें 'परिवार' शब्द का संकीर्ण अर्थ नहीं लिया गया है, अपितु 'वसुधैव कुटुम्बकम्' इस दृढ़ मान्यता को प्रतिश्ठा मिली है। केवल मानव ही के नहीं, पशु-पक्षियों के भी कल्याण की कामना की गई और इसी कामना को व्यवहार में लाने के लिए अतिथि यज्ञ और प्राणियों की कल्पना की गई। 'खुद जियो औरों को भी जीने दो'।

अयं निजः परावेति गणना नघुचेतसाम्।
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।
सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत।।

- **समन्वय भावना** - हमारे देश में अनेक भाशाएं, अनेक देवी-देवता और दार्शनिक विचार धाराओं का प्रचार-प्रसार रहा है। सनातन जैन-बौद्ध और तैतीस करौड़ देवी-देवताओं में समन्वय भारतीय संस्कृति में देखा जाता है।

"सर्व देव नमस्कारः केशवं प्रति गच्छति।" यह सुभाशित तैतीस करौड़ देवताओं में भी परब्रहमा को ही घोशित करता है।

रघुपति राघव राजा राम।पतित पावन सीताराम।
ईश्वर अल्लाह तेरो नाम।सबको सन्मति दे भगवान्।।

- **अहिंसा** -भारतीय 'संस्कृति' मानव को दूसरे मानव तथा मनुष्येत प्राणियों के लिए दयाभाव की शिक्षा देती है। तदनुसार मन, वचन और कर्म से किसी को भी पीड़ा न पहुँचाना अंहिसा है। "अहिंसा परमो धर्मः" भगवान महावीर का नियम पालन अहिंसा का ही उत्कृष्ण रूप है। महात्मागांधी ने अहिंसा के बल पर स्वतन्त्रता आन्दोलन किया और विजय प्राप्त की।

- **परोपकार** - 'परोपकाराय सतां विभूतयः' मन्त्र की उद्घोषणा करने वाली भारतीय संस्कृति का महान उपदेश है। दूसरों की भलाई अपने प्राण त्यागकर भी करनी चाहिए। परोपकारमहापुरूषों में सर्पो की रक्षा के लिए गरूड़ को अपना जीवन समर्पित करने वाले राजा जीभूत वाहन और महर्षि दधीचि, मोरध्वज आदि का नाम उल्लेखनीय है-

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः
परोपकाराय वहनित नद्याः।
परोपकाराय विभाति सूर्यः।
परोपकारार्थ मिदं षरीरम्।।

- **निष्काम कर्म योग** - कर्म करते रहना और कत्र्तव्य का पालन करना यह तो सभी स्थानों में देखा गया है। किन्तु निश्काम कर्मयोग का उपदेश केवल भारतीय संस्कृति में ही दिखाई देता है तद्नुसार मनुश्य को कर्म तो करना चाहिए पर कर्मफल की इच्छा नहीं करनी चाहिए। कर्मफल की इच्छा से व्यक्ति मोक्षमार्ग की ओर उन्मुख नहीं हो सकता।

- **त्याग भावना -** भारतीय संस्कृति शिक्षा देती है कि इस संसार में सब कुछ ईश्वरमय है; ईश्वर से नियन्त्रित है। अतः प्राप्त का त्यागपूर्वक उपभोग करना चाहिये और किसी अन्य के धन की लिप्सा नहीं करना चाहिए।

ईशावास्य मिदं सर्व यत् कि´च जगत्यां जगत्।
तेन व्यक्तेन भु´जीथाः, मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।।

ईशावास्योपनिशद्

- **सदाचार पालन** - भारतीय संस्कृति में धर्म शास्त्रोक्त वचनों के अनुसार अच्छा आचरण करना अनिवार्य है। उपनिशद वाक्य सत्यंवद, धर्मचर, आदि। श्री हरिनारायण षास्त्री ने सदाचरण को सर्वश्रेश्ठ धर्म और मोक्ष का हेतु बताया है -

आचारः सर्वधर्माणां मूर्धानमाधिरोहति।
यथा दहनः समुद भूतं नवनीतं न मज्जति।।
सदाचाराद् यशो लोके सदाचारा त्सुखं दिवि।
सदाचाराद् भवेन्मोक्षः सदाचारो हि कामधुक।।

- **जननी और जन्म भूमि** - भारतीय संस्कृति माता की तरह मातृभूमि को गौरव प्रदान करती है। भारत माता, माता, गौमाता, गुरूमाता आदि। "जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''मातृ देवो भव' पितृ देवो भव,'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या' ऋग्वेद के पृथ्वीसूक्त के इस मन्त्र से मातृभूमि को भी माता मानने की प्रेरणा मिलती है।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि मैथिलशरण गुप्त ने तो अपने देश के प्रति गौरव और अभिमान न रखने वाले को 'नर पशु' कहकर जन्मभूमि के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की है।

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर पशु निरा है, और मृतक समान है।

- **एकीकरण और समन्वय की भावना:-** भारतीय संस्कृति में एकीकरण और समन्वय की अपार षक्तियां युगों से चली आ रही है। मनीषियों की दृष्टि समन्वयात्मक रही है।

ऊ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं षान्तिः,
पृष्वी शान्तिरापः शान्तिरोशधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिब्रर्हम् शान्तिः।।
सर्व शान्तिः शान्तिदेवः शान्तिः साभा शान्ति रेधिः।
ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

- यजुर्वेद अ 36 मंत्र 08

अर्थात् हे परमात्मा स्वरूप। शान्ति कीजिए वायु में शांति हो, अंतरिक्ष में शांति हो पृथ्वी, पर शान्ति हो, वनस्पतियों में शान्ति हो, विश्व में शान्ति हो, ब्रहा में शान्ति हो सब में शान्ति हो, चारों ओर शान्ति हो, हे परमपिता परमेश्वर शान्ति हो, शान्ति हो! शान्ति हो।

गायन्ति देवाः किल गीत कानि
धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे।
स्वर्गा वर्गास्पद् मार्ग भूते भवन्ति।

भूयः पुरूशाः सुरत्वात्।।

देवगण निरन्तर यही गुणगान करते है कि जिन्होंने स्वर्ग और मोक्ष के मार्ग पर चलने के लिए भारत-भूमि में जन्म लिया है। वे मनुश्य हम देवताओं की अपेक्षाओं से अधिक धन्य और भाग्यशाली है।

भारतीय संस्कृति का महत्वः-भारतीय संस्कृति व्यक्ति की उभय पक्षीय उन्नति करती है। शोडश संस्कार व्यक्ति को षारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार से स्वस्थ रखते है। पुरूशार्थ चतुश्टय और आश्रम चतुश्टयका सिद्धान्त भौतिक के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति करता है। वर्ण चतुश्टय का सिद्धान्त कार्यकुशलता से जुड़ा होने के कारण न केवल व्यक्ति की अपितु समाज और राश्ट्र की उन्नति करने में सहायक है।

अयं निजः परोवैति गणना लघु चेतसाम्।
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

३ निश्कर्शः

भारत वर्श पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव स्वरूप भौतिक उन्नति और पूंजीवाद की ओर आकृश्ट है। त्याग, संतोश, तप को त्याग राजनैतिक और आर्थिक महत्वाकांक्षाओं के कुचक् में युवा उलझ रहा है। आतंकवाद और वैश्विक अशांति, पर्यावरण असन्तुलन, बैरोजगारी सुरसा के मुख की भांति विकराल रूप ले चुकी है। भारत ही नहीं वैश्विक स्तर पर भी भारतीय संस्कृति में इन सभी समस्याओं का समाधान है। संस्कृत साहित्य और धर्म ग्रन्थों के अनुशीलन से पुनःभारतीय संस्कृति को अपनाकर हम उन्नत हो सकते है। 'जगद गुरू' के पद पर आसीन हो, 'कृण्वन्तों विश्वार्यम्' का संकल्प ले।

डॉ. हरिनारायण दीक्षित -

अवनतिं हि गता पुनरून्नतिं, समयचक्रवशात् परिवर्तिता
विविध रूप धरा भव शिक्षिका, समभवन्मम् भारतसंस्कृति।
धृति पवित्र विचार विभूशिता, सकल विश्वहिते सततं रता।
विमलशील दयार्जव पालिका, भारत देश विशेश सुसंस्कृतिः।।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. टण्डन डॉ. किरण, (1994): भारतीय संस्कृति, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, प्रकाशन, पृ.सं.1-23.
2. लूणिया बी.एन, (2010): प्राचीन भारतीय संस्कृति, अग्रवाल प्रकाशन, पृ. 5-8.
3. रूहेला एस.पी., (2010): शिक्षा के दार्शनिक तथा समाजषास्त्रीय आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन, पृ.सं. 169,202,210.
4. शर्मा डॉ. महेश, (2019): भारतीय ज्ञान परंपरा विशेशांक, मंथन,एकात्म मानव दर्शन अनुसंधान एवं विकास प्रतिश्ठान प्रकाशन.
5. विवेकानन्द स्वामी,: जाति, संस्कति और समाजवाद, श्रीरामकृश्ण मिशन प्रकाशन.
6. रायबाबु गुलाब,(2016): भारतीय संस्कृति, हिन्दी साहित्य प्रथम, सरयू, राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल.
7. संस्कार सौरभ,: विद्या भारती प्रकाशन.